खेल अर्थव्यवस्था
ग्रामीण युवा और वास्तविक रोज़गार

नारायण सिंह

भारत में खेल अब केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहे; यह एक संगठित और व्यापक रोज़गार पारिस्थितिकी तंत्र बन चुका है, जो ग्रामीण युवाओं को स्थायी आजीविका और आत्मनिर्भर बनने के अवसर प्रदान करता है। खेल कोटा, कोचिंग, अवसंरचना विकास और संबंधित क्षेत्रों ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के नए दरवाजे खोले हैं। खेलो इंडिया, TOPS, ASMITA महिला लीग और खेलो भारत नीति 2025 जैसी केंद्रीय पहलें प्रतिभा की पहचान, वित्तीय समर्थन और समावेशी अवसर सुनिश्चित करती हैं। भारतीय रेलवे, सशस्त्र बल और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयाँ ग्रामीण युवाओं को सामाजिक सुरक्षा, प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन और कॅरियर स्थिरता प्रदान करती हैं।

गाँव में धूल भरे मैदान में एक बच्चा नंगे पाँव गेंद के पीछे दौड़ता है। गाँव की गलियों से शुरू हुआ यह सफर अक्सर उद्देश्य में बदल जाता है और कई बार व्यवसाय में। बड़े शहरों से दूर रहने वाले लाखों युवाओं के लिए खेल अब मनोरंजन से रोज़गार, स्थिरता और राष्ट्रीय गर्व की राह बन गया है।

पिछले दशक में भारत के खेल पारिस्थितिकी तंत्र ने आश्चर्यजनक बदलाव देखा है। खेल अब केवल अनिश्चित कॅरियर विकल्प नहीं रहे, बल्कि ग्रामीण युवाओं के लिए संगठित और सम्मानित आजीविका बन गए हैं। खेल कोटा के तहत सरकारी नौकरियों से लेकर कोचिंग, अवसंरचना निर्माण, उपकरण निर्माण और खेल तकनीक में नए अवसरों से, यह क्षेत्र पूरे देश में रोज़गार पैदा कर रहा है। इस परिवर्तन के केंद्र में खेलो इंडिया जैसी सरकारी पहल हैं जो ग्रामीण भारत को प्रतिभा का सबसे बड़ा स्रोत मानती हैं।

खेलःसरकारी नौकरियों का प्रवेशद्वार

खेल के क्षेत्र में रोज़गार के सबसे सशक्त अवसरों में से एक सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं में खेल कोटा के तहत भर्ती है। वर्तमान में, 43 मान्यता-प्राप्त खेल विधाओं के खिलाड़ी अपनी खेल उपलब्धियों के आधार पर सरकारी नौकरियों के लिए पात्र हैं। इनमें एथलेटिक्स, क्रिकेट, हॉकी, कुश्ती, बैडमिंटन, तीरंदाज़ी, भारोत्तोलन, फुटबॉल, कबड्डी, शूटिंग, शतरंज, साइक्लिंग, रोइंग, जिम्नास्टिक्स, टेनिस, टेबल टेनिस तथा खो-खो और आट्या-पाट्या जैसे पारम्परिक खेल शामिल हैं।

भारतीय रेलवे खेल कोटा के तहत सबसे बड़ा भर्ती निकाय है। इसके बाद भारतीय सेना, पुलिस बल, सरकारी बैंक,

लेखक डीडी न्यूज़ में खेल पत्रकार हैं। ईमेलः narayansinghrps@gmail.com

विश्वविद्यालय और ONGC, इंडियन ऑयल तथा एयर इंडिया जैसे प्रमुख सार्वजनिक उपक्रम आते हैं। ग्रामीण युवाओं के लिए ये नौकरियाँ स्थायी आय, सामाजिक सम्मान और दीर्घकालिक सुरक्षा प्रदान करती हैं।

ओलम्पिक, एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल खेल, विश्व चैंपियनशिप, खेलो इंडिया प्रतियोगिताएँ, राष्ट्रीय खेल, फेडरेशन कप और अंतर-विश्वविद्यालय टूर्नामेंट जैसे मान्यता प्राप्त मंचों पर अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी ग्रुप 'C' और 'D' पदों पर प्रत्यक्ष भर्ती के पात्र होते हैं। कई प्रतियोगिताओं में तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ी भी पात्र माने जाते हैं, जिससे अवसरों का दायरा और व्यापक हो जाता है।

पात्रता, चयन और कॅरियर विकास

हालाँकि खेल उत्कृष्टता प्रवेशद्वार खोलते हैं, लेकिन पात्रता मानदंड पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करते हैं। अधिकांश विभागों में न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता अनिवार्य होती है, जो पद के अनुसार सामान्यतः कक्षा 10 या कक्षा 12 होती है। खिलाड़ियों को उनके द्वारा प्रतिनिधित्व की गई प्रतियोगिताओं के स्तर के आधार पर श्रेणीकृत किया जाता है जिसमें अंतरराष्ट्रीय-स्तर से लेकर विद्यालय-स्तर तक की प्रतियोगिताएँ शामिल हैं।

चयन प्रक्रिया में सामान्यतः लिखित परीक्षा, खेल ट्रायल, चिकित्सकीय परीक्षण और साक्षात्कार शामिल होते हैं। केवल भागीदारी पर्याप्त नहीं मानी जाती। खिलाड़ियों का राज्य या देश का प्रतिनिधित्व करना तथा मान्यता-प्राप्त प्रतियोगिताओं में शीर्ष तीन स्थान प्राप्त करना, अथवा राष्ट्रीय शारीरिक दक्षता अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल करना आवश्यक होता है।

नियुक्ति के बाद भी मैदान पर प्रदर्शन कॅरियर प्रगति का आधार बना रहता है। पदक विजेता खिलाड़ी पदोन्नति, प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं के लिए विशेष अवकाश तथा संस्थागत सहयोग के पात्र होते हैं। प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सफलता अक्सर पदोन्नति की प्रक्रिया को तेज कर देती है, जिससे खेल उत्कृष्टता और व्यावसायिक उन्नति के बीच सीधा संबंध स्थापित होता है।

प्रदर्शन के अनुरूप वेतन संरचना

खेल कोटा के तहत सरकारी नौकरियाँ खिलाड़ियों की उपलब्धियों के अनुरूप संरचित वेतनमान प्रदान करती हैं। उच्च ग्रेड पे पर नियुक्त खिलाड़ी सामान्यतः ओलम्पिक, विश्व चैंपियनशिप, एशियाई खेल या राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेता होते हैं और स्नातक डिग्री रखते हैं। मध्य ग्रेड पे पर नियुक्तियाँ आमतौर पर राष्ट्रीय और अंतर विश्वविद्यालय चैंपियनों की होती हैं, जो कम से कम कक्षा 12 उत्तीर्ण होते हैं।

प्रारंभिक-स्तर के पद उन खिलाड़ियों के लिए उपलब्ध होते हैं जिन्होंने राज्य या जूनियर राष्ट्रीय-स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया हो। ग्रामीण युवाओं के लिए ये वेतनमान अक्सर स्थानीय आय के अवसरों से कहीं अधिक होते हैं और पलायन या अस्थिर रोज़गार का ठोस विकल्प प्रदान करते हैं।

नया खेल महाशक्ति बनता ग्रामीण भारत

ग्रामीण भारत आज देश के खेल पारिस्थितिकी तंत्र की रीढ़ के रूप में उभर रहा है। भारत के लगभग 65.5 करोड़ खेल प्रशंसकों में से 59 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं, जबकि 36 प्रतिशत प्रशंसक महिलाएँ हैं। यह बढ़ती भागीदारी दर्शाती है कि खेल अब भारत के हृदयस्थल तक गहराई से पहुँच चुका है।

खेलो इंडिया जैसे कार्यक्रमों ने इस प्रतिभा को सँवारने में निर्णायक भूमिका निभाई है। इस योजना के तहत खिलाड़ियों को 6.28 लाख रुपये वार्षिक वित्तीय सहायता दी जाती है, जिसमें प्रशिक्षण, उपकरण, पोषण, चिकित्सा देखभाल और प्रतियोगिता

अनुभव शामिल हैं। अब तक 2,781 से अधिक खिलाड़ी इससे लाभान्वित हो चुके हैं। इसका प्रभाव स्पष्ट है–2022 एशियाई खेलों में भारत के 42 पदकों में 124 खेलो इंडिया खिलाड़ियों का योगदान रहा, जबकि 28 खिलाड़ियों ने पेरिस ओलम्पिक 2024 में देश का प्रतिनिधित्व किया। सामूहिक रूप से, इन खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय-स्तर पर हज़ारों रिकॉर्ड स्थापित किए हैं।

रोज़गार सृजन करने वाली खेल अवसंरचना

खेल अवसंरचना में निवेश ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत में रोज़गार का एक प्रमुख स्रोत बन गया है। पिछले 11 वर्षों में सरकार ने 3,074 करोड़ रुपये के निवेश से 323 नई खेल अवसंरचना परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इसके अतिरिक्त, 1,041 खेलो इंडिया केंद्र और 32 खेलो इंडिया उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए गए हैं, जिन्हें 301 मान्यता-प्राप्त खेल अकादमियों का समर्थन प्राप्त है।

ये सुविधाएँ कोच, प्रशिक्षक, फिज़ियोथेरेपिस्ट, पोषण विशेषज्ञ, मैदान कर्मी और प्रशासकों के लिए रोज़गार उत्पन्न करती हैं। मणिपुर का राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय और उत्तर प्रदेश का मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय जैसी संस्थाएँ खेल विज्ञान और कोचिंग के क्षेत्र में शैक्षणिक और व्यावसायिक अवसरों को और विस्तारित कर रही हैं।

खेल के माध्यम से समावेशन

भारत में खेलों की बढ़ती प्रगति के साथ समावेशन पर विशेष ज़ोर दिया गया है। ASMITA महिला लीग जैसी पहलों ने 20 खेल विधाओं में महिलाओं के लिए संरचित खेल अवसरों का विस्तार किया है। राजस्थान महिला कबड्डी पहल जैसे कार्यक्रमों ने 1,200 से अधिक ग्रामीण महिलाओं के लिए पेशेवर अवसर सृजित किए हैं, जिनमें से अनेक ने स्वीकारा है कि इस पहल से उनकी आय में वृद्धि हुई है और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुई हैं।

खेलो भारत नीति 2025 इस प्रगति को आगे बढ़ाते हुए अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, महिलाओं, दिव्यांगजनों और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों के लिए खेल अवसंरचना तक समान पहुँच सुनिश्चित करती है। यह नीति ग्रामीण-शहरी अंतर को कम करने तथा खेल को शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी से जोड़ने पर भी केंद्रित है।

खिलाड़ियों से आगे: विस्तृत होती खेल अर्थव्यवस्था

खेलों से उत्पन्न रोज़गार केवल खिलाड़ियों तक सीमित नहीं है। मेरठ और जालंधर जैसे शहरों में केंद्रित भारत का खेल सामग्री उद्योग हज़ारों ग्रामीण कारीगरों को रोज़गार देता है और हाल के वर्षों में लगातार विकसित हुआ है। क्रिकेट बैट, कबड्डी मैट और कुश्ती उपकरण जैसी पारम्परिक खेल सामग्री की भारत और विदेशों में निरंतर माँग बनी हुई है।

मल्लखम्ब, गतका और कलारीपयट्टु जैसे पारम्परिक खेलों में भी नई रुचि देखने को मिल रही है। ये विधाएँ प्रशिक्षित कोचों और कलाकारों की माँग बढ़ा रही हैं। साथ ही, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में योगदान दे रही हैं। इसी बीच, खेल प्रौद्योगिकी एक नए रोज़गार क्षेत्र के रूप में उभर रही है।

गूगल-डेलॉइट की रिपोर्ट *Think Sports: Unlocking India's $130B Sports Potential* के अनुसार, भारत का खेल क्षेत्र 14 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृद्धि विकास दर से बढ़ते हुए वर्ष 2030 तक 130 अरब डॉलर के मूल्यांकन तक पहुँचने की संभावना रखता है।

ग्रामीण प्रतीक, वैश्विक प्रभाव

ग्रामीण भारत से उभरे खिलाड़ियों की सफलता इस पारिस्थितिकी तंत्र की प्रभावशीलता को रेखांकित करती है। हरियाणा के नीरज चोपड़ा, असम की हिमा दास, मणिपुर की मीराबाई चानू, झारखंड की दीपिका कुमारी, महाराष्ट्र के अविनाश साबले और अरुणाचल प्रदेश की रूपा बायोर इस बात के सशक्त उदाहरण हैं कि समुचित समर्थन मिलने पर ग्रामीण प्रतिभा वैश्विक-स्तर पर चमक सकती है।

खेल: एक सतत कॅरियर मार्ग

आज भारत की खेल यात्रा केवल पदकों और पोडियम तक सीमित नहीं है। यह रोजगार, सशक्तीकरण और राष्ट्र निर्माण की कहानी है। निरंतर नीतिगत समर्थन, अवसंरचना विकास और खेलो इंडिया, *TOPS, ASMITA* तथा खेलो भारत नीति 2025 जैसी समावेशी योजनाओं के माध्यम से खेल ग्रामीण युवाओं के लिए एक विश्वसनीय कॅरियर विकल्प बन चुका है।

जैसे-जैसे अवसरों का विस्तार हो रहा है, खेल अब जोखिम नहीं रहा। यह स्थिरता, सम्मान और प्रगति प्रदान करने वाला व्यवसाय बन गया है। ग्रामीण भारत के लिए खेल का मैदान अब आजीविका और नेतृत्व का लॉन्चपैड बन चुका है। ❑